ABOUT THE AUTHOR

प्रतीक शिवालिक
शिक्षक प्रशिक्षण में 13 वर्ष का अनुभव
भूतपूर्व शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, पटियाला

"प्रतीक शिवालिक" दिल्ली के सबसे प्रसिद्ध शिक्षक प्रशिक्षक हैं। वह 2013 से शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। यहाँ तक कि दक्षिण भारत से भी छात्र उनसे पढ़ने आते हैं। वह अब तक हजारों शिक्षकों को प्रशिक्षित कर चुके हैं। आप केंद्रीय विद्यालय शिक्षण परीक्षा और साक्षात्कार की तैयारी में इतने सफल हैं कि आपको भारत के प्रत्येक केंद्रीय विद्यालय में कम से कम एक शिक्षक मिल जाएगा जो कभी उनका छात्र था। उनके द्वारा बनाई गई टेस्ट सीरीज़ अपनी गुणवत्ता के लिए जानी जाती है और छात्रों द्वारा भारत में सर्वश्रेष्ठ रेटिंग प्राप्त की जाती है। उनके छात्रों ने केवीएस साक्षात्कार में 60/60 अंक (100% स्कोर) प्राप्त किए हैं। उनके छात्रों को DSSSB परीक्षा में पहली और दूसरी रैंक भी मिली है। उन्होंने स्वयं KVS में ऑल इंडिया रैंक 4, DSSSB में ऑल इंडिया रैंक 3 हासिल की है और 7 बार CTET टॉपर हैं। आप उन्हें Telegram और Youtube पर भी ढूँढ सकते हैं। उन्होंने पटियाला (पंजाब) के केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली सरकार के विद्यालय तथा दिल्ली सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य किया है।

About the Book

यह किताब खास तौर पर UPTET पेपर-II (कक्षा 6 से 8) (कला वर्ग) की तैयारी के लिए बनाई गई है। इसमें सभी मुख्य विषय—बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र, हिंदी भाषा, English Language और सामाजिक अध्ययन—एक ही जगह पर, नए सिलेबस के अनुसार दिए गए हैं। यह आपकी तैयारी के लिए एक बेहतरीन "वन-स्टॉप सॉल्यूशन" है।

किताब की मुख्य विशेषताएँ –

- एक ही किताब में सभी विषय UPTET पेपर-II के आधिकारिक सिलेबस के अनुसार शामिल।
- थ्योरी को आसान और सरल शब्दों में समझाया गया है, ताकि हर कोई आसानी से समझ सके।
- हर अध्याय के बाद प्रश्न और उनके उत्तर दिए गए हैं, जिससे आपकी तैयारी मजबूत हो सके।
- 1850+ अभ्यास प्रश्न जो समझ को मजबूत करने और प्रश्न हल करने की क्षमता बढ़ाने में मदद करेंगे।
- परीक्षा को ध्यान में रखकर तैयार किया गया कंटेंट, जिससे सही दिशा में तैयारी हो।
- यह किताब सेल्फ-स्टडी और प्रैक्टिस के लिए बेहतरीन है, जिससे आप खुद से अच्छी तैयारी कर सकते हैं।

चाहे आप तैयारी की शुरुआत कर रहे हों या अंतिम रिवीजन, यह गाइडबुक आपको फोकस बनाए रखने, सही प्रैक्टिस करने और UPTET पेपर-II में सफलता पाने का आत्मविश्वास देने में मदद करेगी।

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB2153

UPTET PAPER-II (कक्षा 6 से 8)
स्टडी बुक (कला वर्ग)
ISBN - 978-93-6890-014-6
₹ 699

UPTET PAPER-II (कक्षा 6 से 8) स्टडी बुक (कला वर्ग)

CB2153

AGRAWAL EXAMCART

उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

UPTET

PAPER-II (कक्षा 6 से 8) कला वर्ग

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र। हिंदी भाषा।
English Language। सामाजिक अध्ययन

एकमात्र
सटीक एवं सम्पूर्ण पुस्तक
जो कराये प्रथम प्रयास में परीक्षा पास!

सम्पूर्ण
स्टडी बुक

मुख्य विशेषताएँ

1. **थ्योरी**
   UPTET के पाठ्यक्रम एवं NCERT की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित सम्पूर्ण थ्योरी
2. **शिक्षाशास्त्र**
   सभी विषयों के सम्पूर्ण शिक्षाशास्त्र का समावेश
3. **अभ्यास प्रश्न (2013-2022)**
   1850+ विगत वर्षों के प्रश्नों का अध्यायवार समावेश

– PRATEEK SHIVALIK

Code	Price	Pages	ISBN
CB2153	₹699	708	978-93-6890-014-6

विषय सूची

परीक्षा से सम्बन्धित जानकारी (Exam Information)

➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** **xii**
(UPTET परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

➔ **पाठ्यक्रम एवं परीक्षा पैटर्न** **xiii**

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

इकाई	अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	विगत वर्षों के प्रश्न (2013-22)	पृष्ठ संख्या
1. बाल विकास	1.	बाल विकास : अर्थ, आवश्यकता तथा क्षेत्र (Child Development : Meaning, Need and Scope)	257	1-3
	2.	बाल विकास की अवस्थाएँ (Stages of Child Development)		4-35
	3.	बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक (Basis of Child Development and Factors Affecting Them)		36-41
	4.	अधिगम (Learning)		42-45
	5.	अधिगम के नियम (Laws of Learning)		46-47
	6.	अधिगम के प्रमुख सिद्धांत तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यावहारिक उपयोगिता (Major Principles of Learning and Their Practical Usefulness in Classroom Teaching)		48-59
2. शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ	7.	शिक्षण (Teaching)	39	60-63
	8.	सम्प्रेषण (Communication)		64-71
	9.	शिक्षण के सिद्धांत (Principles of Teaching)		72-76
	10.	शिक्षण के सूत्र (Maxims of Teaching)		77-78
	11.	शिक्षण प्रविधियाँ (Teaching Techniques)		79-84
	12.	शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम) (New Approaches of Teaching)		85-89
	13.	सूक्ष्म शिक्षण और शिक्षण के आधारभूत कौशल (Micro-Teaching and Fundamental Skills of Teaching)		90-93

इकाई	अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	विगत वर्षों के प्रश्न (2013-22)	पृष्ठ संख्या
3. समावेशी शिक्षा– निर्देशन एवं परामर्श	14.	शैक्षिक समावेशन (Educational Inclusion)	41	94-112
	15.	समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, विधियाँ, सामग्री, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ (Tools, Methods, Materials, TLM and Attitudes Required for Inclusion)		113-120
	16.	समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी (Tools and Techniques Required to Assess Learning of Inclusive Children)		121-123
	17.	समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन (Guidance for Incllusive Children)		124-125
	18.	समावेशी बच्चों हेतु परामर्श (Counselling for Inclusive Children)		126-129
	19.	समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श (Guidance and Counselling for Inclusive Children)		130-135
4. अधिगम एवं अध्यापन	20.	बच्चे कैसे सीखते व सोचते हैं ? (How Children Learn and Think ?)	73	136-137
	21.	समस्या समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक (Child as a Problem Solver and a Scientific Investigator)		138-140
	22.	बच्चों के सीखने की वैकल्पिक अवधारणाएँ और बच्चों की त्रुटियाँ (Alternative Concepts of Children's Learning and Children's Errors)		141-142
	23.	अभिप्रेरणा और अधिगम (Motivation and Learning)		143-146
	24.	स्मृति एवं विस्मृति (Memory and Forgetfulness)		147-149
		➢ महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न	810	150-165

हिंदी भाषा एवं शिक्षाशास्त्र

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	विगत वर्षों के प्रश्न (2013-22)	पृष्ठ संख्या
1.	अपठित अनुच्छेद	44	1-3
2.	हिंदी वर्णमाला (स्वर–व्यंजन) एवं वर्णों के मेल से मात्रिक तथा अमात्रिक शब्दों की पहचान	19	4-5
3.	संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय	21	6-11
4.	वर्तनी	16	12-13
5.	वाक्य रचना	21	14-15

अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	विगत वर्षों के प्रश्न (2013-22)	पृष्ठ संख्या
6.	वाक्यगत अशुद्धियाँ	15	16-17
7.	हिंदी की सभी ध्वनियों के पारस्परिक अंतर की जानकारी विशेष रूप से–ष, स, ब, व, ढ, ड, क्ष, छ, ण तथा न की ध्वनियाँ, वर्ण, अनुस्वार एवं चन्द्रबिंदु में अंतर, संयुक्ताक्षर एवं अनुनासिक ध्वनियों के प्रयोग से बने शब्द, सभी प्रकार की मात्राएँ	21	18-21
8.	विराम चिह्न	10	22-23
9.	समानार्थी, विलोमार्थी, तुकान्त, अतुकान्त, समान ध्वनियों वाले शब्द एवं अनेकार्थी शब्द	30	24-26
10.	लिंग, वचन, कारक एवं काल	30	27-30
11.	उपसर्ग–प्रत्यय, तत्सम, तद्भव व देशज शब्दों की पहचान एवं उनमें अंतर	30	31-34
12.	मुहावरे, लोकोक्तियाँ एवं वाक्यांश के लिए एक शब्द	30	35-37
13.	संधि : स्वर संधि (दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि, व्यंजन संधि एवं विसर्ग संधि)	15	38-41
14.	वाच्य, समास, रस, अलंकार एवं छंद	43	42-52
15.	हिंदी साहित्य : कवियों एवं लेखकों की रचनाएँ, प्रसिद्ध पंक्तियाँ, प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ एवं विधाएँ, पुरस्कार एवं सम्मान	105	53-56
16.	हिंदी शिक्षाशास्त्र	26	57-90
	➢ कुल प्रश्न संख्या	476	

English Language & Pedagogy

Chapter No.	Chapter Name	PYQ (2013-22)	Page No.
1.	Unseen Passage	24	1-2
2.	The Sentence : Subject & Predicate	15	3-4
3.	The Noun : Kinds of Noun, Number & Gender	21	5-8
4.	The Pronoun and Their Kinds & Use of Somebody, Nobody and Anybody	26	9-11
5.	The Adjectives and Their Kinds & Degrees	20	12-15
6.	The Verbs & Their Kinds Subject Verb Agreement	20	16-19
7.	The Adverb and Its Kinds	27	20-21
8.	The Preposition and Its Kinds	21	22-24
9.	The Conjunction and Its Kinds	10	25-26

Chapter No.	Chapter Name	PYQ (2013-22)	Page No.
10.	The Interjection	20	27
11.	The Tenses and Conditional Sentences	20	28-30
12.	Articles	16	31-34
13.	Interchange of Affirmative, Negative & Interrogative Sentences	11	35-36
14.	Punctuation	15	37-38
15.	The Formation of Word	14	39-40
16.	Phrasal Verbs	15	41-42
17.	Active and Passive Voice	10	43-45
18.	Narration	15	46-50
19.	Antonyms, Synonyms, One Word Substitution, Idioms and Phrases & Proverbs	59	51-56
20.	Use of Homophones	19	57-58
21.	Miscellaneous : Question Tag, Spelling & Silent Letters in Words, Clauses & Synthesis of Sentences (Interchange of Simple, Compound and Complex Sentences), Figures of Speech & Writers, Their Works and Word Classes	99	59-67
22.	English Pedagogy	30	68-108
	➢ Total Questions	527	

सामाजिक अध्ययन एवं शिक्षाशास्त्र

इकाई	अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	विगत वर्षों के प्रश्न (2013-22)	पृष्ठ संख्या
1. इतिहास	1.	इतिहास जानने के स्त्रोत (Sources of History)	10	1-2
	2.	मानव का विकास, सिन्धु घाटी एवं वैदिक सभ्यता (Human Evolution, Indus Valley & Vedic Civilization)	10	3-10
	3.	जैन धर्म, बौद्ध धर्म एवं महाजनपद काल (Jainism, Buddhism & Mahajanpadas Period)	10	10-16
	4.	मौर्य काल एवं मौर्योत्तर भारत (Mauryan Period & Post Mauryan India)	10	16-21
	5.	गुप्त, गुप्तोत्तर युग, संगम युग एवं दक्षिण भारतीय साम्राज्य (Gupta, Post Gupta Era, Sangam Age & South Indian Empire)	10	21-30
	6.	संघर्ष का युगः विजयनगर और बहमनी साम्राज्य एवं दिल्ली सल्तनत (The Age of Struggle : Vijaynagar and Bhamani Kingdom & Delhi Sultanate)	10	30-39

इकाई	अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	विगत वर्षों के प्रश्न (2013-22)	पृष्ठ संख्या
	7.	मध्यकालीन धार्मिक आन्दोलन (Medieval Religious)	**10**	**39-40**
	8.	मुगल साम्राज्य का उदय और स्वतंत्र राज्य एवं मराठा साम्राज्य (Rise of Mughal Dynasty and Autonomous State & Maratha Empire)	**10**	**40-48**
	9.	यूरोपीय शक्ति का भारत में आगमन और अंग्रेजी राज्य की स्थापना एवं भारत में ब्रिटिश प्रशासन और उसके आर्थिक प्रभाव (The Advent of European Powers in India and the Establishment of the English State & Administrative and Economic Effects of the British Empire in India)	**10**	**48-55**
	10.	भारत में नवजागरण, भारत में राष्ट्रवाद का उदय (Renaissance in India, Rise of Nationalism in India)	**10**	**56-61**
	11.	1857-58 का स्वतंत्रता संग्राम और अन्य विद्रोह (The War of Independence and Other Rebellion of 1857-58)	**10**	**61-63**
	12.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1885-1947) एवं स्वतंत्रता के बाद भारत (Indian National Movement (1885-1947) & India After Independence)	**10**	**63-71**
		➢ महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न	**120**	**72-75**
2. भूगोल	**1.**	ब्रह्मांड और सौरमंडल (Universe and Solar System)	**10**	**76-82**
	2.	ग्लोब, अक्षांश और देशांतर एवं मानचित्र अध्ययन (Globe, Latitudes and Longitudes & Map Reading)	**10**	**83-88**
	3.	पृथ्वी का आंतरिक भाग, शैल चक्र, जल चक्र और प्रमुख स्थलरूप, वायुदाब तथा पवन संचार एवं भूमि, मृदा और जल संसाधन, वन और प्रमुख घास के मैदान, विश्वः खनिज और ऊर्जा संसाधन एवं विश्व के महाद्वीप (Interior of Earth, Rock Cycle, Water Cycle and Major Landforms, Atmospheric Pressure and Air Circulation, Land, Soil and Water Resources, Forest and Major Grasslands, World : Minerals and Power Resources & Continents of the World)	**10**	**89-110**
	4.	भारत का भौतिक विभाजन व संरचना (Physical Division and Structure of India)	**10**	**110-116**
	5.	भारत का अपवाह तंत्र (Drainage System of India)	**10**	**116-119**
	6.	भारत की जलवायु (Climate of India)	**10**	**119-122**
	7.	भारतः वनस्पति, वन्य जीवन एवं राष्ट्रीय उद्यान (India : Vegetation, Wildlife & National Parks)	**10**	**123-126**
	8.	भारत में मृदा और कृषि (Soil and Agriculture in India)	**10**	**126-133**

इकाई	अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	विगत वर्षों के प्रश्न (2013-22)	पृष्ठ संख्या
	9.	भारत में खनिज और ऊर्जा संसाधन, उद्योग, परिवहन, संचार एवं व्यापार (Communication and Trade , Transportation, Industries, Mineral and Energy Resources in India)	**10**	**133-143**
		➢ महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न	**90**	**143-146**
3. पर्यावरण		➢ महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न	**10**	**147-148**
4. राजनीतिशास्त्र	**1.**	लोकतंत्र और नागरिकता (Democracy and Citizenship)	**10**	**149-153**
	2.	संसद (The Parliament)	**10**	**153-156**
	3.	राजनीतिक दल (Political Parties)	**10**	**156-158**
	4.	सरकार के प्रकार, विभिन्न स्तर और चुनाव (Types of Governments, Different Tiers and Election)	**6**	**158-167**
	5.	स्थानीय स्वशासन (Local Self Government)	**10**	**167-170**
	6.	न्यायपालिका और आपराधिक न्याय प्रणाली (Judiciary and Criminal Justice System)	**10**	**170-173**
	7.	रक्षा और विदेश-नीति (Defence and Foreign Policy)	**8**	**173-175**
		➢ महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न	**64**	**176-178**
5. गृह शिल्प/गृह विज्ञान	**1.**	मानव शरीर, रोग, भोजन, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य (Human Body, Diseases, Food, Hygiene and Health)	**27**	**179-207**
	2.	गृह प्रबंधन, सिलाई कला, धुलाई कला, पाक कला, बुनाई कला तथा चित्रकला (Home Management, Sewing, Haundry Cooking, Knitting and Painting)	**18**	**208-214**
6. शारीरिक शिक्षा एवं खेल	**1.**	शारीरिक शिक्षा, व्यायाम, योग एवं प्राणायाम (Physical Education, Exercise, Yoga and Pranayama)	**5**	**215-234**
	2.	मार्चिंग, खेल (राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय) पुरस्कार, खेल प्रबंधन, खेल नियोजन [Marching, Sports (National & International) Awards, Sports Management and Sports Planning]	**22**	**235-247**
	3.	प्राथमिक चिकित्सा, नशीले पदार्थों के दुष्परिणाम तथा उनसे बचने के उपाय (First Aid, Side Effects of Narcotics and Ways to Avoid Them)	**8**	**248-254**

इकाई	अध्याय क्र.	अध्याय का नाम	विगत वर्षों के प्रश्न (2013-22)	पृष्ठ संख्या
7. संगीत		➢ महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न	**17**	**255-261**
8. उद्यान विज्ञान एवं फल संरक्षण	**1.**	मिट्टी, कृषि तथा पशुपालन (Soil, Agriculture and Animal Husbandry)	**46**	**262-270**
	2.	झाड़ी एवं लताएँ (शोभा वाले पौधे, मौसमी फूल की खेती, फलों की खेती, शाक वाटिका, सब्जियों की खेती) [Bushes and Vines (Ornamental Plants, Seasonal Flowers Cultivation, Fruit Cultivation, Vegetable, Garden, Vegetable Cultivation)]	**4**	**271-273**
	3.	फल परिरक्षण एवं संरक्षण, खाद्य पदार्थों का संरक्षण, अचार, जैली तथा सॉस बनाना (Fruit Preservation and Conservation, Food Preservation, Making of Pickles, Jellies and Sauces)	**7**	**274-280**
		➢ कुल प्रश्न संख्या	**154**	
9. सामाजिक अध्ययन शिक्षाशास्त्र			**31**	**281-321**
उत्तरमाला				**1-10**

अतिरिक्त अध्ययन सामग्री ई-बुक
(Extra Study Material E-Book)

Extra Study Material ई-बुक का Content

- CTET [2024-23] के 5 सॉल्व्ड पेपर्स की ई-बुक
- डिस्काउंट कूपन दिया गया है। उसका उपयोग करें और 'www.examcart.in' से हमारी किताबें सबसे अच्छे डिस्काउंट पर खरीदें।

नोट : **Link Expire** होने से पहले दिए गए **QR Code** को स्कैन करके आप यह **Extra Study Material E-Book** को **Download** कर लें।

ऐसी पुस्तकें जो कोई आपको बताना नहीं चाहता!

इन अनोखी पुस्तकों ने कई छात्रों को उनके पहले प्रयास में ही परीक्षा पास करने में मदद की है और हम जो कहते हैं, उसे साबित भी करते हैं—इसीलिए हर पुस्तक के कुछ सैंपल चैप्टर दिए गए हैं। हम गारंटी देते हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद आपको समझ आएगा कि ये पुस्तकें क्यों सबसे बेहतरीन हैं और क्यों इतने सारे छात्र इनसे सफल हुए हैं।

नोट

पढ़ने के लिए, किसी भी पुस्तक के पास दिए गए **QR Code** को स्कैन करें, उसके वेबसाइट पेज पर **"View PDF"** पर क्लिक करें। अगर पुस्तक पसंद आए, तो **Extra Study Material** ई-बुक में दिया गया डिस्काउंट कूपन इस्तेमाल करें और बेहतरीन डिस्काउंट भी पाएँ!

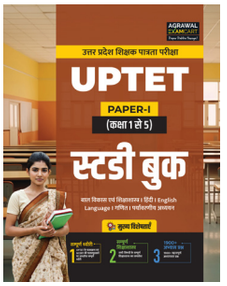

Class 1-5 (Guide Book)

Class 6-8 गणित एवं विज्ञान (Guide Book)

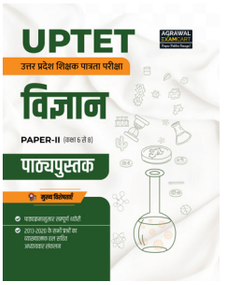

Class 6-8 विज्ञान (Textbook)

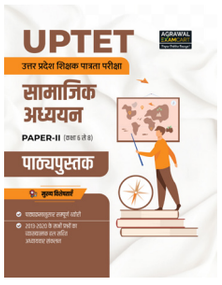

Class 6-8 सामाजिक अध्ययन (Textbook)

Class 1-5 गणित (Textbook)

Class 1-5 पर्यावरणीय अध्ययन (Textbook)

Class 1-5 & 6-8
बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र
(Textbook)

Class 1-5 & 6-8
हिंदी
(Textbook)

Class 1-5 & 6-8
संस्कृत
(Textbook)

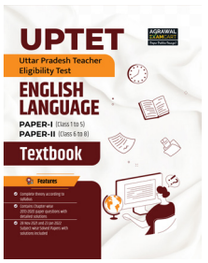

1-5 & 6-8
English Language
(Textbook)

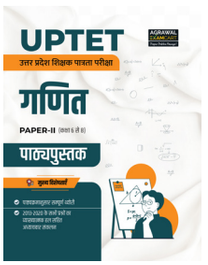

Class 6-8
गणित
(Textbook)

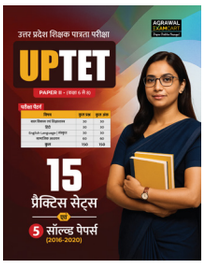

Class 6-8
सामाजिक अध्ययन
(Practice Sets & Solved Papers)

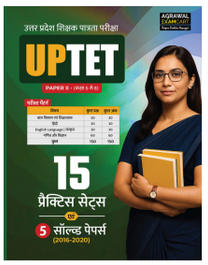

Class 6-8
गणित और विज्ञान
(Practice Sets & Solved Papers)

Class 1-5
(Practice Sets & Solved Papers)

अध्याय 1 बाल विकास : अर्थ, आवश्यकता तथा क्षेत्र (Child Development : Meaning, Need and Scope)

प्रस्तावना (Introduction)

- विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो संसार के प्रत्येक जीव में पाई जाती है। विकास की यह प्रक्रिया भ्रूणावस्था से लेकर मृत्यु पर्यन्त किसी न किसी रूप में चलती रहती है। इसकी गति कभी तीव्र और कभी मन्द होती है।
- मानव विकास का अध्ययन मनोविज्ञान की जिस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है, उसे बाल–मनोविज्ञान कहा जाता है, परन्तु अब मनोविज्ञान की यह शाखा 'बाल विकास' कही जाती है। बालक के जन्म से पूर्व तथा पश्चात् जो भी परिवर्तन दिखाई देते हैं, वे सब बालक विकास के ही अंग हैं।
- वर्तमान समय में बाल विकास के अध्ययनों में मनोवैज्ञानिकों की रुचि दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, क्योंकि इस दिशा में हुए अध्ययनों ने बालकों के जीवन को सुखी, समृद्धशाली और प्रशंसनीय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- इस इकाई में हम बालक के विकास के अर्थ, आवश्यकता तथा इसके क्षेत्रों के बारे में अध्ययन करेंगे।

बाल मनोविज्ञान या विकासात्मक मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Child Psychology or Developmental Psychology)

- बाल मनोविज्ञान, गर्भावस्था से प्रौढ़ावस्था का अध्ययन विकासात्मक दृष्टिकोण से करता है।
- यह बालक के ज्ञानवाही एवं विकास, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास, भाषा का विकास, खेल का विकास तथा बौद्धिक विकास इत्यादि का अध्ययन कर इनकी तुलना प्रौढ़ व्यक्ति से करता है तथा इनमें कैसे एवं क्यों भिन्नता होती है, इस पर प्रकाश डालता है। इसलिए बाल मनोविज्ञान को विकासात्मक मनोविज्ञान के नाम से भी पुकारा जाता है।
- वर्तमान समय में इसके अन्तर्गत गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त विकास की विभिन्न अवस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाने लगा है।
- विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने बाल मनोविज्ञान की परिभाषा अपने मतानुसार भिन्न–भिन्न रूपों में दी है–
  - **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, "बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से परिपक्वावस्था तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।"
  - **क्रो** और **क्रो** के अनुसार, "बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल के प्रारम्भ से किशोरावस्था की प्रारम्भिक अवस्था तक करता है।"
  - **थॉम्पसन** के अनुसार, "बाल मनोविज्ञान सभी को एक नयी दिशा में संकेत करता है। यदि उसे उचित रूप में समझा जा सके तथा उसका उचित समय पर उचित ढंग से विकास हो सके तो प्रत्येक बालक एक सफल व्यक्ति बन सकता है।"

बाल विकास का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Child Development)

- बाल विकास बच्चे के विकास के विभिन्न स्वरूपों तथा व्यवहार और क्षमताओं में परिवर्तन का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह एक बहुत विस्तृत क्षेत्र है जिसके अंतर्गत मानव विकास तथा परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।
- यह विकासात्मक मनोविज्ञान या मानव विकास का ही एक भाग है। विकासात्मक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की ही एक शाखा है जिसमें मानव द्वारा अपने पूरे जीवनकाल में प्राप्त हुए अनुभवों का अध्ययन किया जाता है।
- बाल विकास अध्ययन का लक्ष्य उन कारकों की पहचान करना है जो जीवन के पहले दो दशकों में युवाओं में होने वाले परिवर्तनों को प्रभावित करते हैं।
- यह विकास की विषय वस्तु या परिणाम की अपेक्षा विकास प्रक्रिया पर अधिक केंद्रित रहता है। उदाहरण के लिए भाषा विकास के अध्ययन में बाल विकास यह अध्ययन करने में केंद्रित रहता है कि बच्चे किस प्रकार बोलना सीखते हैं, उनके सीखने के विशिष्ट स्वरूप क्या हैं तथा वो परिस्थितियाँ जिससे उनके सीखने के स्वरूप में विविधता पैदा होती है बजाय इसके कि उनका शब्द संग्रह क्या है या वे क्या बोल रहे हैं।
- विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने बाल–विकास की परिभाषा अपने मतानुसार भिन्न–भिन्न रूपों में दी है–
  - **हरलॉक** के अनुसार, "आज बाल विकास में मुख्यतः बालक के रूप व्यवहार, रुचियों और लक्ष्यों में होने वाले उन विशिष्ट परिवर्तनों की खोज पर बल दिया जाता है, जो उसके एक विकासात्मक अवस्था से दूसरी विकासात्मक अवस्था में पदार्पण करते समय होते हैं। बाल विकास में है। यह खोज करने का भी प्रयास किया जाता है कि यह परिवर्तन कब होते हैं, इसके क्या कारण हैं और यह वैयक्तिक हैं या सार्वभौमिक।"
  - **क्रो** एण्ड **क्रो** के अनुसार, "बाल विकास वह विज्ञान है जो बालक के व्यवहार का अध्ययन गर्भावस्था से मृत्युपर्यन्त तक करता है।"
  - **डार्विन** के अनुसार, "बाल विकास व्यवहारों का वह विज्ञान है जो बालक के व्यवहार का अध्ययन गर्भावस्था से मृत्युपर्यन्त तक करता है।"

बाल विकास का महत्व (Importance of Child Development)

- बालकों के स्वभाव को समझने में सहायक
- बालकों की शिक्षा में सहायक
- बालक के विकास को समझने में सहायक
- बालक के व्यक्तित्व विकास को समझने में सहायता
- बालक के व्यवहार नियन्त्रण में सहायक
- बाल निर्देशन में सहायता

बाल–मनोविज्ञान/बाल विकास की आवश्यकता (Need of Child Psychology/Child Development)

- बाल विकास अनुसन्धान का एक क्षेत्र माना जाता है। बालक के जीवन को सुखी और समृद्धिशाली बनाने में बाल मनोविज्ञान का योगदान महत्वपूर्ण माना है। मनोविज्ञान की इस शाखा का केवल बालकों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध है, जो बालकों की समस्याओं पर विचार करते हैं और बाल मनोविज्ञान की उपयोगिता को स्वीकार करते हैं। समाज के विभिन्न लोग बाल मनोविज्ञान से लाभान्वित हो रहे हैं, जैसे–बालक के माता–पिता तथा अभिभावक, बालक के शिक्षक, बाल सुधारक तथा बाल–चिकित्सक आदि।
- बाल मनोविज्ञान के द्वारा हम बालकों के मन और व्यवहार को भली–भाँति समझ सकते हैं।
- बाल मनोविज्ञान हमारे सम्मुख बालकों के भविष्य की एक उचित रूपरेखा प्रस्तुत करता है। जिससे अध्यापक एवं अभिभावक बच्चे में अधिगम की क्षमता का सही विकास कर सकते हैं।
- किस अवस्था में बच्चे की कौन–सी क्षमता का विकास कराना चाहिए, इसका उचित प्रयोग अवस्थानुसार विकास के प्रारूपों को जानने के पश्चात् ही किया जा सकता है, जिसके लिए बाल–विकास के स्वरुप को समझना अत्यंत आवश्यक है। उदाहरण के लिए एक बच्चे को चलना तभी सिखाया जा सकता है, जब वह चलने की अवस्था में हो अन्यथा इसके परिणाम नकारात्मक हो सकते हैं। अतः बाल मनोविज्ञान की एक व्यावहारिक उपयोगिता यह भी है कि यह बालकों के समुचित निर्देशन के लिए व्यावहारिक उपाय बता सकता है।

बाल विकास का क्षेत्र (Scope of Child Development)

- बाल विकास विषय के क्षेत्र के अन्तर्गत जिन समस्याओं अथवा विषय सामग्री का अध्ययन किया जाता है वह निम्न प्रकार की हो सकती है–
  - **वातावरण और बालक**–बाल विकास में इस समस्या के अन्तर्गत दो प्रकार की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। प्रथम यह कि बालक का वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है? द्वितीय यह कि वातावरण बालक के व्यवहार व्यक्तित्व तथा शारीरिक विकास आदि को किस प्रकार प्रभावित करता है? अतः स्पष्ट है कि बालक का पर्यावरण एक विशेषकारी क्षेत्र है।
  - **बालकों की वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन**–बाल विकास में वैयक्तिक भिन्नताओं तथा इससे सम्बन्धित समस्याओं का भी अध्ययन किया जाता है। व्यक्तिगत भेदों की दृष्टि से शरीर रचना सम्बन्धी भेद, मानसिक योग्यता सम्बन्धी भेद, सांवेगिक भेद, व्यक्तित्व सम्बन्धी भेद, सामाजिक व्यवहार सम्बन्धी भेद तथा भाषा विकास सम्बन्धी भेद आदि का अध्ययन किया जाता है।
  - **मानसिक प्रक्रियाएँ**–बाल विकास में बालक की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन भी किया जाता है; जैसे–प्रत्यक्षीकरण, सीखना, कल्पना, स्मृति चिन्तन, साहचर्य आदि। इन सभी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन दो समस्याओं के रूप में किया जाता है। प्रथम यह कि विभिन्न आयु स्तरों पर बालक की यह विभिन्न मानसिक प्रक्रियाएं किस रूप में पाई जाती है, इनकी क्या गति है आदि। द्वितीय यह कि इन मानसिक प्रक्रियाओं का विकास कैसे होता है तथा इनके विकास को कौन–से कारक प्रभावित करते हैं।
  - **बालक–बालिकाओं का मापन**–बाल विकास के क्षेत्र में बालकों की विभिन्न मानसिक और शारीरिक मापन तथा मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन भी किया जाता है। मापन से तात्पर्य है कि इन क्षेत्रों में उसकी समस्याएं क्या हैं और उनका निराकरण कैसे किया जा सकता है?
  - **बाल व्यवहार और अन्तः क्रियाएँ**–बाल विकास के अध्ययन क्षेत्र में अनेक प्रकार की अन्तः क्रियाओं का अध्ययन भी होता है। बालक का व्यवहार गतिशील होता है तथा उसकी विभिन्न शारीरिक और मानसिक योग्यताओं और विशेषताओं में क्रमिक विकास होता रहता है। अतः स्वाभाविक है कि बालक और उसके वातावरण में समय–समय पर अन्तः क्रियाएँ होती रहें। एक बालक की ये अन्तः क्रियाएँ सहयोग, व्यवस्थापन, सामाजिक संगठन या संघर्ष, तनाव और विरोधी प्रकार की भी हो सकती हैं। बाल मनोविज्ञान में इस समस्या का भी अध्ययन होता है कि विभिन्न विकास अवस्थाओं में बालक की विभिन्न अन्तः क्रियाओं में कौन–कौन से और क्या–क्या क्रमिक परिवर्तन होते हैं तथा इन परिवर्तनों की गतिशीलता किस प्रकार की है?
  - **समायोजन सम्बन्धी समस्याएँ**–बाल विकास में बालक के विभिन्न प्रकार की समायोजन–समस्याओं का अध्ययन भी किया जाता है। साथ ही इस समस्या का अध्ययन भी किया जाता है कि भिन्न–भिन्न समायोजन क्षेत्रों; जैसे–पारिवारिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन आदि में भिन्न–भिन्न आयु स्तरों पर बालक का क्या और किस प्रकार का समायोजन है। इस क्षेत्र में कुसमायोजित व्यवहार का भी अध्ययन किया जाता है।
  - **विशिष्ट बालकों का अध्ययन**–जब बालक की शारीरिक और मानसिक योग्यताओं और विशेषताओं का विकास दोषपूर्ण ढंग से होता है तो बालक के व्यवहार और व्यक्तित्व में असमान्यता के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। बाल विकास में इन विभिन्न असमानताओं व इनके कारणों और गतिशीलता का अध्ययन होता है। विशिष्ट बालक की श्रेणी में निम्न बालक आते हैं–शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहने वाले बालक, पिछड़े बालक, अपराधी बालक एवं समस्यात्मक बालक आदि।
  - **अभिभावक बालक सम्बन्ध**–बालक के व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में अभिभावकों और परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है। अभिभावक–बालक सम्बन्ध का विकास, अभिभावक, बालक सम्बन्धों के निर्धारक, पारिवारिक सम्बन्धों में ह्रास आदि समस्याओं का अध्ययन बाल विकास मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत किया जाता है।

- **बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन**—प्राणी के जीवन प्रसार में अनेक अवस्थायें होती हैं; जैसे—गर्भकालीन अवस्था, शैशवावस्था, बचपनावस्था, बाल्यावस्था और किशोरावस्था। बाल विकास केवल बाल्यावस्था का ही अध्ययन नहीं करता अपितु विकास क्रम की सभी अवस्थाओं के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, बौद्धिक आदि सभी पहलुओं का अध्ययन करता है।
- **बाल विकास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन**—बाल विकास, विकास के किसी एक ही क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं होता है। इसके अन्तर्गत विकास के विभिन्न पहलुओं, जैसे—शारीरिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास,सामाजिक विकास, क्रियात्मक विकास, भाषा विकास, नैतिक विकास,चारित्रिक विकास और व्यक्तित्व विकास सभी का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाता है।
- **बालकों की विभिन्न असामान्यताओं का अध्ययन**—बाल विकास के अन्तर्गत केवल सामान्य बालकों के विकास का ही अध्ययन नहीं किया जाता बल्कि बालकों के जीवन विकास क्रम में होने वाली असामान्यताओं और विकृतियों का भी अध्ययन किया जाता है। बाल विकास, असन्तुलित व्यवहारों, मानसिक विकारों, बौद्धिक दुर्बलताओं तथा बाल अपराधों के कारणों को जानने का प्रयास करता है और निराकरण हेतु उपाय भी बताता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन**—बाल विकास केवल मानसिक दुर्बलताओं और रोगों का ही अध्ययन नहीं करता, बल्कि विभिन्न मनोवैज्ञानिक तरीकों से उनके उपचार भी प्रस्तुत करता है। मनोचिकित्सा बाल मनोविज्ञान और बाल विकास की ही देन है।
- **बालकों की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन**—बाल विकास बालकों के बौद्धिक विकास की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं; जैसे—अधिगम, कल्पना, चिन्तन, तर्क, स्मृति तथा प्रत्यक्षीकरण आदि का अध्ययन करता है। बाल विकास यह जानने का प्रयास करता है कि विभिन्न आयु स्तरों में इन मानसिक प्रक्रियायें किस रूप में पायी जाती हैं और इनके विकास की गति क्या होती है? इसी के आधार पर मानसिक प्रक्रियाओं का विकास किया जाता है।
- **बालकों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन**—बाल विकास के अन्तर्गत बालकों की विभिन्न शारीरिक और मानसिक योग्यताओं का मापन व मूल्यांकन किया जाता है। योग्यताओं के मापन व मूल्यांकन के लिये बाल विकास के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों द्वारा नित नये वैज्ञानिक तथा प्रमापीकृत परीक्षणों का निर्माण किया जाता है।
- **बालकों की रुचियों का अध्ययन**—बाल विकास बालकों की रुचियों का अध्ययन कर उन्हें शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करता है। रुचियाँ एक अर्जित व्यवहार हैं जो जन्मजात नहीं होती हैं बल्कि सीखी जाती हैं। रुचियाँ कार्य की प्रगति में प्रेरणा का कार्य करती हैं और लक्ष्य की पूर्ति को आसान बनाती है। यदि बालक को किसी कार्य में रुचि होती है तो वह उसे शीघ्रता से अधिक मनोयोग के साथ पूरा कर लेता है।
- **संवेगात्मक विकास एवं सामाजिक विकास में सहायक**—यदि बालक अपनी आयु के अनुसार संवेगों को प्रकट नहीं कर रहा है तो उसका संवेगात्मक विकास उचित रूप में नहीं हो रहा है। सामाजिक व्यवहार के अन्तर्गत परिवार के सदस्यों को पहचानना, उनके प्रति क्रोध एवं प्रेम की प्रतिक्रिया व्यक्त करना, परिचितों से प्रेम तथा अन्य से भयभीत होना एवं बड़े अन्य व्यक्तियों के कार्यों में सहायता देना आदि को सम्मिलित किया गया है। बाल विकास के अध्ययन से हम बालक के संवेगात्मक विकास एवं सामाजिक विकास को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।
- **चारित्रिक विकास एवं भाषा विकास में सहायक**—इसके अन्तर्गत बालकों के शारीरिक अंगों के प्रयोग, सामान्य नियमों के ज्ञान, अहंभाव की प्रबलता, आज्ञा पालन की प्रबलता, नैतिकता का उदय एवं कार्यफल के प्रति चेतनता की भावना आदि को सम्मिलित किया जाता है। बालकों के भाषायी विकास का अध्ययन भी बाल विकास के अन्तर्गत आता है। बालक अपनी आयु के अनुसार विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ एवं शब्दों का उच्चारण करता है। जैसे—1 वर्ष से 1 वर्ष 9 माह तक के बालक की शब्दोच्चारण प्रगति लगभग 118 शब्द के लगभग होनी चाहिये। यदि शब्दोच्चारण की प्रगति इससे कम है तो बालक का भाषायी विकास उचित रूप में नहीं हो रहा है। बाल विकास के अध्ययन से हम बालक के चारित्रिक विकास एवं भाषा विकास को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।
- **सृजनात्मकता और सौन्दर्य सम्बन्धी विकास में सहायक**—बालकों की सृजनात्मकता का विकास भी बाल विकास की परिधि में आता है। बाल कल्पना के विविध स्वरूपों के आधार पर सृजनात्मक विकास के स्वरूप को निश्चित किया जाता है। बालकों को अनेक प्रकार की कविताओं में सौन्दर्य की अनुभूति होती है। वह कविताओं के भाव को ग्रहण करने की चेष्टा करता है। बाल विकास के अध्ययन से हम बालक के सृजनात्मकता और सौन्दर्य सम्बन्धी विकास को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

❑❑